Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

हिन्दी साहित्य

प्रश्नपत्र–1 (खंड–ख)

(हिन्दी साहित्य का इतिहास)

भाग 2

- भारतेंदु युग
- द्विवेदी युग
- छायावाद
- प्रगतिवाद
- प्रयोगवाद
- नई कविता
- समकालीन कविता

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: CSHL03

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

हिन्दी साहित्य

प्रश्नपत्र–1 (खण्ड–ख)

(हिन्दी साहित्य का इतिहास)

भाग–2

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web: www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

UPSC DLP

विषय सूची (Contents)

6.	**भारतेन्दु युग**	**5-15**
6.1	परिचय	5
6.2	भारतेन्दु युग की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ	6
6.3	भारतेन्दुयुगीन साहित्य में ज़िंदादिली	8
6.4	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और उनका साहित्य	9
6.5	बालकृष्ण भट्ट व उनका साहित्य	11
6.6	प्रताप नारायण मिश्र व उनका साहित्य	12
6.7	भारतेन्दु मंडल के अन्य सदस्य	13
6.8	"हिन्दी नए चाल में ढली, 1873 में"	13
6.9	नवजागरण की अवधारणा	14
7.	**द्विवेदी युग**	**16-28**
7.1	परिचय	16
7.2	द्विवेदी युगीन प्रवृत्तियाँ/विशेषताएँ	17
7.3	द्विवेदी युग में भाषायी अद्वैत	20
7.4	द्विवेदी युगीन इतिवृत्तात्मकता	21
7.5	आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की सम्पादन कला	22
7.6	मैथिलीशरण गुप्त (सन् 1886–1964)	23
7.7	द्विवेदी युग के अन्य प्रमुख कवि	27
8.	**छायावाद**	**29-61**
8.1	परिचय	29
8.2	छायावाद से तात्पर्य	29
8.3	छायावाद के उदय के कारण, परिस्थितियाँ	30
8.4	छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ	31
8.5	छायावाद की विभिन्न व्याख्याएँ	33
8.6	छायावाद एवं स्वच्छंदतावाद	35
8.7	छायावाद एवं रहस्यवाद	37
8.8	छायावाद की राष्ट्रीय चेतना	38
8.9	छायावाद की सौन्दर्य चेतना	39
8.10	छायावाद में वैयक्तिकता	40
8.11	छायावाद का दर्शन	41
8.12	छायावाद शक्तिकाव्य के रूप में	44

8.13 छायावाद के काव्य रूप 45
8.14 छायावाद के नये अलंकार 46
8.15 निराला का मुक्त छंद 46
8.16 प्रमुख कवयित्री: महादेवी वर्मा 47
8.17 प्रमुख कवि: जयशंकर प्रसाद 50
8.18 प्रमुख कवि: सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' 51
8.19 प्रमुख कवि: सुमित्रानंदन पंत 53
8.20 उत्तर-छायावाद 55
8.21 राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा 58

9. प्रगतिवाद **62-69**
9.1 परिचय 62
9.2 पृष्ठभूमि व परिस्थितियाँ 62
9.3 छायावाद और प्रगतिवाद में संबंध 63
9.4 प्रगतिशील व प्रगतिवाद में अंतर 63
9.5 प्रगतिवाद का साहित्यिक दृष्टिकोण 64
9.6 प्रगतिवाद और चेतना 65
9.7 प्रगतिवाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ 65
9.8 मार्क्सवाद: एक परिचय 68

10. प्रयोगवाद **70-76**
10.1 परिचय 70
10.2 प्रयोगवाद के प्रेरणा-स्रोत 70
10.3 प्रगतिवाद व प्रयोगवाद में अंतर 72
10.4 प्रयोगवाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ 72
10.5 प्रपद्यवाद या नकेनवाद 75

11. नई कविता **77-88**
11.1 परिचय 77
11.2 नई कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ 79
11.3 नई कविता और लघुमानववाद 85
11.4 नई कविता और विसंगतिबोध 86
11.5 नई कविता में फैन्टेसी शिल्प 87

12. समकालीन कविता **89-95**
12.1 परिचय 89
12.2 अकविता या साठोत्तरी कविता 89
12.3 जनवादी कविता 92
12.4 नवगीत आंदोलन 94

अध्याय
6

भारतेन्दु युग

6.1 परिचय (Introduction)

हिन्दी साहित्य के इतिहास में 1850 ई. से 1900 ई. तक के कालखंड को भारतेन्दु युग कहा जाता है। गौरतलब है कि 1850 ई. से हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग की शुरुआत होती है जो आज तक चल रहा है। आधुनिक युग को कई उपखंडों में बाँटा गया है जिनमें से पहला भारतेन्दु युग है। यह हिन्दी साहित्य के इतिहास का पहला युग है जिसका नामकरण किसी रचनाकार के नाम पर हुआ है। वस्तुतः भारतेन्दु का व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था कि उनके नाम पर ही इस युग का नाम रखा गया।

भारतेन्दु का जन्म 1850 ई. में हुआ। भारतेन्दु ने कई प्रबंध तथा कई मुक्तक कविताएँ रचीं। इसके अतिरिक्त उन्होंने नाटक, निबन्ध, रंगमंच आदि विधाओं पर भी अपनी लेखनी चलाई। पत्रकारिता के क्षेत्र में भारतेन्दु ने *'कवि वचन सुधा'*, *'हरिश्चंद्र मैगज़ीन'* आदि पत्र चलाकर प्रथम हिन्दी समाचार पत्र *'उदंत मार्तण्ड'* की परम्परा को कायम रखा।

भारतेन्दु ने गद्य में भी विविध विधाओं की शुरुआत की। उन्होंने उन सभी आवश्यक विषयों पर लिखा जिनसे नवजागरण का आधार तैयार हुआ। भारतेन्दु का प्रभाव उस युग के सभी साहित्यकारों पर ही नहीं बल्कि बाद के साहित्यकारों पर भी पड़ा।

भारतेन्दु युग का नामकरण

किसी युग का नामकरण दो आधारों पर किया जा सकता है। पहला आधार तो यह हो सकता है कि उस युग की प्रमुख प्रवृत्ति पर युग का नामकरण किया जाए जैसे भक्तिकाल या रीतिकाल। दूसरा आधार यह हो सकता है कि उस युग का नाम किसी ऐसे व्यक्तित्व के नाम पर रखा जाये जिसने उस युग के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हो। भारतेन्दु युग के नामकरण का यही दूसरा आधार है। इसका कारण यह है कि भारतेन्दु ने स्वयं तो विभिन्न विधाओं में अत्यधिक रचनाएँ की हीं, साथ ही अपने समूह 'भारतेन्दु मंडल' को प्रेरित करके तत्कालीन हिन्दी साहित्य को गति और समुचित दिशा प्रदान करने का महत्त्वपूर्ण कार्य भी किया।

तत्कालीन परिस्थितियाँ

1857 ई. के बाद महारानी विक्टोरिया का भारत पर अधिकार हो गया और 1900 ई0 तक आते-आते ब्रिटिश सरकार ने कई सुधार कार्य किये लेकिन वे बहुत महत्वपूर्ण नहीं थे। कई लोगों को सरकार द्वारा कल्याणकारी कदम उठाये जाने की उम्मीद थी लेकिन ऐसा नहीं हुआ। 1885 ई. में कांग्रेस की स्थापना के बाद भारतीय जनता को अंग्रेज़ी राज्य के औपनिवेशिक हितों के विषय में पता चला। इस तरह 1857 ई. से 1885 ई. तक ब्रिटिश सरकार के स्पष्ट स्वरूप के विषय में एक द्वंद्व की स्थिति रही। इसीलिए इस युग की कविता में जहाँ राष्ट्रभक्ति के स्वर मिलते हैं, वहीं राजभक्ति की भावनाएँ भी मिलती हैं।

पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान के परिचय से 19वीं शताब्दी में भारत में नवजागरण की लहर आई जिससे भारत में प्रत्येक क्षेत्र में बुद्धिवाद, मानवतावाद, विवेक, सहिष्णुता, न्यायप्रियता एवं व्यक्तिवाद को महत्व दिया जाने लगा। इस युग में न तो रीतिकालीन राज्याश्रय था और न ही रीतिवादी मानसिकता। अतः इस काल में जो कविता लिखी गई उसमें देश, समाज की चिंता प्रमुख थी।

भारतेन्दु युग से हिन्दी साहित्य में आधुनिकता का उदय होता है। आधुनिकता एक वैचारिक दृष्टिकोण है जो ईश्वर की जगह मानव को तथा आस्था की जगह तर्क को केंद्र में रखती है। आधुनिकता वैज्ञानिक दृष्टिकोण में विश्वास रखती है एवं कोरी भावुकता का निषेध करती है। इसीलिए आधुनिकता के दौर में जो साहित्य लिखा गया, वह लौकिक जीवन की चिंता

रचनात्मक ऊर्जा है। इस ऊर्जा के प्रभावस्वरूप दोनों संस्कृतियाँ एक-दूसरे की अच्छाइयाँ ग्रहण करना चाहती हैं और अपनी बुराइयाँ छोड़ना चाहती हैं। यही सम्पूर्ण सांस्कृतिक प्रक्रिया समाज के इतिहास में नवजागरण कहलाती है।

भारतीय समाज के इतिहास में ऐसे दो जागरण सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहे हैं। पहला जागरण मध्यकाल से संबंधित है जब भारत में इस्लाम का आगमन हुआ। इस्लामी संस्कृति समतामूलक किन्तु कट्टर धार्मिक विचारों पर आधारित थी, जबकि भारतीय संस्कृति धार्मिक लचीलेपन किन्तु विषमतामूलक सामाजिक संरचना पर आधारित थी। इन दोनों की टकराहट से भक्तिकालीन जागरण हुआ और सामासिक संस्कृति उद्भूत हुई। संस्कृतियाँ पहले टकराती हैं, फिर तटस्थ होती हैं और अंत में धीरे-धीरे परिचित होकर परस्पर घुल-मिल जाती हैं। घुलने-मिलने का यही स्तर सामासिक संस्कृति को जन्म देता है।

19वीं शताब्दी का नवजागरण हिन्दी साहित्य के इतिहास का दूसरा जागरण है जिसमें एक ओर भारतीय सामासिक संस्कृति है तो दूसरी ओर पाश्चात्य संस्कृति। इस समय भारतीय संस्कृति अध्यात्म-प्रधान व मध्यकालीन दौर से गुजर रही थी जबकि पाश्चात्य संस्कृति वैज्ञानिक तथा मशीनी क्रांति के आधार पर भौतिकवाद तथा पूंजीवाद का प्रतिनिधित्व कर रही थी। उसका आध्यात्मिक पक्ष तुलनात्मक रूप से कमज़ोर था। उसके पास वैज्ञानिक तार्किक शिक्षा थी, इहलौकिक मानसिकता थी, समानता, स्वतंत्रता, न्याय व बंधुत्व के आधुनिक आदर्श थे जो तत्कालीन भारतीय समाज के लिए अनर्जित थे। इन दोनों की टकराहट से भारतीय संस्कृति ने आधुनिक शिक्षा व भौतिकता सीखी तो पाश्चात्य संस्कृति यहाँ के अध्यात्म से प्रभावित हुई।

साहित्य में नवजागरण की अभिव्यक्ति

किसी साहित्य में नवजागरण की चेतना कुछ विशेष रूपों में दिखाई पड़ती है। ये इस प्रकार हैं–

- आत्ममूल्यांकन का भाव नवजागरण का केन्द्रीय भाव है क्योंकि दूसरी संस्कृति से परिचित होने पर समाज उसकी तुलना में आत्म-मूल्यांकन करता है। इसके साथ-साथ आत्म-आलोचना तथा आत्मपरिष्कार जैसी मानसिकता भी नजवागरण में अनिवार्यत: पनपती है, क्योंकि अपनी कमियों को पहचान कर उन पर चोट करना तथा कुछ नई चीजें सीखना इस स्थिति में स्वाभाविक होता है।
- अपने अतीत के प्रति रोमानी बोध भी नवजागरण में सामान्यत: दिखता है क्योंकि समाज को रचनात्मक प्रेरणा देने के लिए ऐतिहासिक या मिथकीय प्रसंग बेहद कारगर भूमिका निभाते हैं। यहाँ इतिहास तटस्थ रूप में नहीं आता बल्कि एक आदर्श तथा रोमानियत भरे रूप में प्रयुक्त होता है।
- जो संस्कृति हमारे समक्ष उपस्थित है, उसके सकारात्मक तत्वों को ग्रहण करने की चेतना नवजागरण में काफी प्रमुख होती है। 19वीं सदी के नवजागरण में यूरोपीय संस्कृति के जिन तत्वों का प्रभाव दिखता है, वे हैं– वैज्ञानिक तार्किक शिक्षा, आधुनिक व इहलोकवादी दृष्टिकोण, समानता, स्वतंत्रता, न्याय व बंधुत्व जैसे सामाजिक-राजनीतिक आदर्श इत्यादि। जहाँ-जहाँ साहित्य में ये तत्व नज़र आते हैं, वे सभी बिन्दु नवजागरण के प्रभाव के रूप में देखे जाते हैं।

अभ्यास हेतु प्रश्न

1. 'ब्राह्मण' पत्र के माध्यम से प्रताप नारायण मिश्र का हिन्दी-पत्रकारिता को प्रदत्त योगदान (टिप्पणी)। **U.P.S.C. (Mains) 2017**
2. हिंदी गद्य के विकास में बालकृष्ण भट्ट का योगदान (टिप्पणी) **U.P.S.C. (Mains) 2016**
3. 'हिंदी प्रदीप' के माध्यम से बालकृष्ण भट्ट का हिंदी पत्रकारिता को प्रदत्त योगदान **U.P.S.C. (Mains) 2015**
4. भारतेन्दु की राष्ट्रीय चेतना (टिप्पणी) **U.P.S.C. (Mains) 2014**

अध्याय
7

द्विवेदी युग

7.1 परिचय *(Indroduction)*

(क) द्विवेदी जी एवं उनका योगदान

द्विवेदी जी का पूरा नाम महावीर प्रसाद द्विवेदी था। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 1903 में 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन संभाला। यह पत्रिका 1899 ई. में शुरू हुई थी और इसके संपादक मंडल में श्री श्यामसुंदर दास, श्री राधाकृष्ण दास, श्री कार्तिक प्रसाद खत्री, श्री जगन्नाथ रत्नाकर तथा श्री किशोरीलाल गोस्वामी शामिल थे। सरस्वती पत्रिका ने खड़ी बोली साहित्य के विकास में अप्रतिम भूमिका निभाई।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का योगदान भारतेन्दु के योगदान से अलग है। भारतेन्दु महान साहित्यकार भी थे और अपने मंडल के निर्विवाद नेता भी। महावीर प्रसाद द्विवेदी एक साहित्यकार के तौर पर उतने सफल नहीं हुए किंतु अपने युग के बड़े से बड़े साहित्यकारों के भीतर उन्होंने जिस तरह से भाषायी अनुशासन पैदा किया और साहित्य को रीतिवादी मानसिकता से बाहर निकालने में उत्प्रेरक की भूमिका निभाई, वह हिन्दी साहित्येतिहास में विशिष्ट है। उन्होंने विभिन्न रचनाकारों को साहित्य रचना के लिए प्रेरित करते हुए साहित्य को गति प्रदान करने में विशिष्ट भूमिका निभाई। अपने प्रारंभिक जीवन में उन्होंने कवितायें लिखीं लेकिन वे गद्य की ओर ज्यादा उन्मुख रहे। ललित साहित्यकारों को उन्होंने खूब प्रोत्साहन दिया। सरस्वती पत्रिका द्वारा खड़ी बोली को एक व्याकरण सम्मत रूप भी उन्होंने प्रदान किया। अंग्रेज़ी, संस्कृत, मराठी, बंगला से हिन्दी अनुवाद कर योगदान दिया साथ ही हिन्दी पाठकों की अभिरुचि को परिष्कृत करने का श्रेय भी उन्हें है।

भारतेन्दु युग में खड़ी बोली में गद्य का विकास हुआ परन्तु काव्य में कुछ विशेष नहीं किया जा सका। महावीर प्रसाद के निर्देशन में खड़ी बोली में कविता लिखने में तेजी आई। खड़ी बोली का पहला महाकाव्य *'प्रिय प्रवास'* अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्वारा इसी युग में लिखा गया। हिन्दी के पहले बड़े राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त भी इस काल में हुए जिन्होंने भारत भारती, साकेत, यशोधरा और द्वापर जैसी कालजयी रचनाएँ कीं।

(ख) नामकरण का आधार

1900 से 1918 ई. तक की कविता को द्विवेदी युगीन काव्य कहा जाता है। इस युग की साहित्यिक चेतना को नयी दृष्टि व दिशा देने में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने मुख्य भूमिका निभाई। उनके अविस्मरणीय योगदान के कारण इस युग को द्विवेदी युग कहा गया।

(ग) द्विवेदी युगीन परिस्थितियाँ

1857 की क्रांति के बाद भारत में अग्रेंज़ो की राजनैतिक व्यवस्था दृढ़ हो गई। 1885 ई. में कांग्रेस की स्थापना के बाद भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में तेजी आई। 1900 शताब्दी में हुये सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलनों के कारण भारत में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न हुआ और भारतीयों ने एक नये ढंग से सोचना आरंभ किया और अंग्रेज़ो द्वारा लाई गई पाश्चात्य संस्कृति की प्रतिक्रिया में भारतीयों में भारतीय संस्कृति के प्रति गौरव की भावना उत्पन्न हुई साथ ही पाश्चात्य ज्ञान के आलोक में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की व्याख्या की आवश्यकता भी महसूस की गई। इस तरह पुनर्जागरण से बुद्धिवाद, वैज्ञानिकता, समानता, सहिष्णुता, न्यायप्रियता, मानवतावादी दृष्टिकोण जैसे मूल्यों की स्थापना से एक लोकोन्मुखी दृष्टि पनपी।

1900 से 1920 के बीच स्वदेशी आंदोलन एवं असहयोग आंदोलन से पूरे देश में स्वाधीनता की चेतना की एक लहर आई। स्वदेशी आंदोलन ने भारतीयता पर बल दिया और अपने अतीत को फिर से पहचानने के लिये विवश किया। भारतीय जनमानस ने ये महसूस किया कि पश्चिम के विचार व संस्कृति में जो तत्व आत्मसात करने के लायक हैं वे भारतीय संस्कृति

अध्याय
8

छायावाद

8.1 परिचय

छायावाद 1918-1936 ई. तक चला हिन्दी कविता के इतिहास का प्रसिद्ध आंदोलन है जिसमें चार प्रमुख कवि शामिल रहे हैं- जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा। इस आंदोलन के मूल्यांकन को लेकर इतने अधिक विवाद हैं कि कुछ लोग इसे आधुनिक काल का स्वर्ण युग कहते हैं तो कुछ अन्य की निगाह में यह आंदोलन अपनी सामाजिक ज़िम्मेदारियों से कटा होने के कारण विशेष सम्मान का पात्र नहीं हैं। लंबे समय तक हुए विवादों के बाद हिन्दी समीक्षा की वर्तमान औसत राय यह है कि छायावाद अपने समय के दायित्वों को गंभीर और सूक्ष्म स्तर पर निभाने वाला आंदोलन था और वह निश्चित तौर पर हिन्दी साहित्य की एक महती उपलब्धि है।

छायावाद की उपयुक्त समझ के लिए यह जानना ज़रूरी है कि छायावाद एक स्थिर आंदोलन न होकर अपनी प्रकृति में विकसनशील रहा है। 1918 के आसपास इन कवियों ने जैसी भाव प्रवण कविताएँ लिखीं, वे उन कविताओं से काफी अलग हैं जो यही कवि 1930-36 के दौर में लिख रहे थे। इसलिए छायावाद के मूल्यांकन में यह द्वंद्व हमेशा रहता है कि किस दौर की कविताओं को आधार बनाकर निष्कर्ष निकाले जाएँ। बेहतर यही होगा कि कोई भी निष्कर्ष निकालने से पहले हम इस बात की जाँच कर लें कि हमारे उदाहरण सिर्फ आरंभिक दौर की कविताओं के तो नहीं हैं।

8.2 छायावाद से तात्पर्य

'छायावाद' शब्द के अर्थ के सम्बन्ध में विद्वानों ने विभिन्न मत दिए परंतु छायावाद की कोई एक निश्चित परिभाषा कभी तय नहीं हो सकी। इस शब्द के प्रथम प्रयोक्ता मुकुटधर पांडेय ने अपने निबंधों में छायावाद की पाँच विशेषताओं का उल्लेख किया है जो इस प्रकार हैं- (1) वैयक्तिकता, (2) स्वातंत्र्य चेतना, (3) रहस्यवादिता, (4) शैलीगत वैशिष्ट्य, (5) अस्पष्टता

आगे चलकर, विभिन्न विद्वानों ने 'छायावाद' शब्द की अलग-अलग व्याख्या की। कई विद्वानों ने यही संकेत दिया कि छायावाद का संबंध किसी प्रतीकात्मक या रहस्यात्मक काव्य से है। यह संकेत मुकुटधर पांडेय की व्याख्या में भी था और आगे भी बना रहा। उदाहरण के लिए, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने छायावाद की परिभाषा इस अनोखे अंदाज में की- *"छायावाद से लोगों का क्या मतलब है, कुछ समझ में नहीं आता। शायद उनका मतलब है कि किसी कविता के भावों की छाया यदि कहीं अन्यत्र जाकर पड़े तो उसे छायावादी कविता कहना चाहिए।"*

आचार्य शुक्ल भी छायावाद के प्रति सकारात्मक नहीं थे। उन्हें लगता था कि स्वच्छंदतावाद की स्वच्छ व प्रांजल धारा के विकास को छायावादी कवियों ने अपने रहस्यवादी व प्रतीकवादी काव्य के माध्यम से रोक दिया। उन्होंने छायावाद की व्याख्या रहस्यवाद व प्रतीकवाद के रूप में ही की और प्राय: उसे हिन्दी साहित्य की नकारात्मक प्रवृत्ति के रूप में देखा।

शुक्ल जी के बाद कुछ समीक्षकों ने छायावाद को सकारात्मक नज़रिए से देखने की कोशिश की। सबसे पहले आचार्य शांतिप्रिय द्विवेदी ने छायावाद को गांधीवाद के साहित्यिक संस्करण के रूप में पहचान दिलाने की कोशिश की।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने छायावाद नाम के प्रति अरूचि ज़ाहिर करते हुए कहा कि- *"छायावाद शब्द केवल चल पड़ने के जोर से ही स्वीकारणीय हो सका है, नहीं तो इस श्रेणी की कविता की प्रकृति को प्रकट करने में यह शब्द एकदम*

अध्याय
9

प्रगतिवाद

9.1 परिचय

1936-1943 तक हिन्दी कविता के इतिहास में एक विशेष आंदोलन चला जिसे प्रगतिवाद के नाम से जाना जाता है। इसकी शुरुआत 1936 से इसलिए मानी जाती है क्योंकि इसी वर्ष 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना हुई थी और लखनऊ में प्रेमचंद की अध्यक्षता में उसका पहला सम्मेलन हुआ था।

ई.एम. फोस्टर ने 1935 में पेरिस में 'प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन' की स्थापना की थी। 1936 में उसी की एक शाखा के रूप में भारत में 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना हुई। इसकी स्थापना में सज्जाद ज़हीर और मुल्कराज आनंद की विशेष भूमिका थी।

शुरू में प्रगतिशील लेखक संघ का ढाँचा काफी उदार था और प्रगतिशील विचार रखने वाले सभी लोग, चाहे उनकी विचारधारा कोई भी हो, उससे जुड़ते थे। कुछ ही समय में स्पष्ट हो गया कि यह मंच मार्क्सवादी विचारधारा के समर्थन को प्रगतिशील होने की शर्त मानता था। यह धारणा स्पष्ट होने के बाद इस संगठन में वही रचनाकार बचे जो मार्क्सवाद में निष्ठा रखते थे। शेष रचनाकारों ने स्वयं को इस मंच से अलग कर लिया और दावा किया कि प्रगतिशीलता और प्रगतिवाद दो अलग धारणाएँ हैं।

कुल मिलाकर, वर्तमान में प्रगतिवाद से आशय उन कवियों के आंदोलन से है जो मार्क्सवादी विचारधारा के आधार पर अपनी विषय-वस्तु और रचना प्रक्रिया निर्धारित करते हैं। ऐसे कवियों में केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन, गजानन माधव मुक्तिबोध, केदारनाथ सिंह, नागार्जुन, रामविलास शर्मा आदि प्रमुख हैं। दिनकर भी काफी हद तक प्रगतिवाद की धारा में शामिल होते हैं, हालाँकि वे सिर्फ मार्क्सवाद के प्रति प्रतिबद्ध न होकर कई विचारधाराओं में संतुलन साधने की कोशिश करते हैं।

9.2 पृष्ठभूमि व परिस्थितियाँ

कुछ लोग आरोप लगाते है कि प्रगतिवाद एक विदेशी विचारधारा पर टिका हुआ आंदोलन है और इसका भारतीय परिस्थितियों से कोई संबंध नहीं है।

वस्तुतः यह आरोप निराधार है। अगर हम ध्यान से देखें तो 1930 के दशक में भारतीय स्वाधीनता संग्राम को गांधीवाद के बाद जो विचारधारा सर्वाधिक प्रभावित कर रही थी, वह समाजवाद ही थी। गांधी जी के दो बड़े आंदोलन (असहयोग तथा सविनय अवज्ञा) विफल हो चुके थे और जनता वैकल्पिक विचारों के प्रति सकारात्मक रुझान रख रही थी। जवाहरलाल नेहरू के अलावा सुभाष चंद्र बोस, जयप्रकाश नारायण और राममनोहर लोहिया जैसे कई समाजवादी नेता जनता के बीच लोकप्रिय होने लगे थे। क्रांतिकारी आंदोलन का दूसरा चरण 1928-1931 के दौरान संपन्न हुआ था जिसमें शामिल भगतसिंह और चंद्रशेखर आज़ाद जैसे क्रांतिकारी मार्क्सवादी विचारों के ही समर्थक थे।

1917 की सोवियत क्रांति ने पूरी दुनिया पर प्रभाव डाला था। भारत में पूंजीवाद का विकास हो रहा था और ट्रेड यूनियन आंदोलन भी ज़ोर पकड़ रहा था। लेनिन घोषणा कर चुका था कि पराधीन देशों में साम्राज्यवाद ही पूंजीवाद का चरम रूप है और उसके खिलाफ संघर्ष ही समाजवादी संघर्ष है। 1929 में अमेरिका में आई व्यापक आर्थिक मंदी में दुनिया भर में पूंजीवाद के प्रति अविश्वास पैदा कर दिया था। ये सारी स्थितियाँ भारतीय बुद्धिजीवियों को भी प्रभावित कर रही थीं।

1930 के दशक में भारत में किसान और मजदूर आंदोलन सघन हो गए थे। आदिवासियों के आंदोलन भी ज़ोर पकड़ रहे थे। महिलाएँ भी अपने घरों से निकलकर अपनी आज़ादी का रास्ता ढूंढ रही थीं। समाज के सभी वंचित वर्गों को आज़ादी

अध्याय
10

प्रयोगवाद

10.1 परिचय

आधुनिक हिन्दी कविता के इतिहास में सन् 1943 में अज्ञेय द्वारा संपादित 'तारसप्तक' के प्रकाशन के साथ ही एक नया मोड़ उपस्थित होता है, जिसे 'प्रयोगवाद' कहा गया है। इस संकलन में सात कवियों की कविताएँ शामिल थीं- रामविलास शर्मा, मुक्तिबोध, अज्ञेय, गिरिजाकुमार माथुर, नेमिचंद्र जैन, प्रभाकर माचवे तथा भारतभूषण अग्रवाल। सामान्यत: माना जाता है कि प्रयोगवाद प्रगतिवाद के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया के तौर पर शुरू हुआ आंदोलन था, पर यह पर्याप्त सच नहीं है। अगर हम इन सात कवियों के नामों पर गौर करें तो पाएंगे कि इनमें कम से कम तीन-चार ऐसे थे जिनकी निष्ठा मार्क्सवाद के प्रति रही थी, जैसे- रामविलास शर्मा, मुक्तिबोध, नेमिचंद्र जैन तथा भारतभूषण अग्रवाल। इन कवियों के प्रयोगवाद में शामिल होने का मतलब यही था कि अज्ञेय की तरह ये कवि भी विचारधारा के सत्य को अंतिम मानने को तैयार नहीं थे और अपने स्तर पर अपने सत्य की तलाश करने के इच्छुक थे। अपने सत्य को खोजने की प्रक्रिया प्रयोगशीलता की मांग करती है और इस प्रयोगशीलता के कारण ही इस आंदोलन को प्रयोगवाद कहा गया। अज्ञेय को 'प्रयोगवाद' नाम पसंद नहीं था क्योंकि 'प्रयोगशील' और 'प्रयोगवाद' समानार्थक नहीं हैं। प्रयोगशीलता से भाव निकलता है कि ये कवि प्रयोग करके सत्य की तलाश करना चाहते हैं जबकि प्रयोगवाद से यह भाव निकलता है कि प्रयोग करना ही इन कवियों के जीवन का उद्देश्य है। इसके बावजूद, प्रचलित हो जाने के कारण आज भी इस युग को प्रयोगवाद ही कहा जाता है, प्रयोगशीलता का युग नहीं।

प्रयोगवाद कुछ मायनों में छायावाद से भी अलग है और प्रगतिवाद से भी। यह छायावादी कविता की रोमानियत और वायवीयता तथा प्रगतिवादी कविता की वैचारिक प्रतिबद्धता के विरोध में खड़ा होकर 'स्वानुभूति की प्रामाणिकता' को रचना के केंद्र में स्थापित करने का आग्रह करता है। शिल्प के स्तर पर यह छायावाद की ठहरी हुई अभिव्यंजना प्रणाली तथा प्रगतिवाद की अभिधात्मकता व सपाटबयानी का अतिक्रमण करता है। इसी नई दृष्टि को अज्ञेय ने 'प्रयोगशीलता' कहा था।

प्रयोगवाद में प्रयुक्त 'प्रयोग' शब्द नए जीवन सत्यों को पाने की बेचैनी का द्योतक है। अज्ञेय ने तारसप्तक की भूमिका में प्रयोगशील शब्द का प्रयोग किया है और इसे जीवन-सत्यों के अन्वेषण का माध्यम माना है। अत: अज्ञेय के अनुसार *"प्रयोग अपने आप में साध्य नहीं है, वह साधन है और दोहरा साधन है; क्योंकि एक तो वह उस सत्य को जानने का साधन है जिसे कवि प्रेषित करता है, दूसरे वह उस प्रेषण की क्रिया को और उसके साधनों को जानने का भी साधन है।"* दूसरे सप्तक की भूमिका में 'प्रयोगवाद' नामकरण का विरोध करते हुए अज्ञेय ने लिखा है कि प्रयोग का कोई वाद नहीं होता। किसी को प्रयोगवादी कहना उतना ही निरर्थक है जितना कवितावादी कहना। अत: 'प्रयोगशील' होने और 'प्रयोगवादी' होने में फर्क है। प्रयोगवाद वस्तुत: प्रयोगशीलता का पक्षधर है।

10.2 प्रयोगवाद के प्रेरणा-स्रोत

प्रयोगवाद के संबंध में प्रसिद्ध आक्षेप है कि यह आंदोलन भारतीय समाज की परिस्थितियों से पैदा नहीं हुआ है बल्कि पश्चिमी साहित्य के प्रभावों पर आधारित है। यह आरोप मुख्यत: प्रगतिवादियों या मार्क्सवादियों ने लगाया है। उनका यह भी कहना है कि शीतयुद्ध के दौर में प्रयोगवादी कविता अमेरिकी पक्ष का प्रतिनिधित्व करती है।

सच यह है कि प्रयोगवाद के उद्भव के मूल में कुछ योगदान भारतीय परिस्थितियों का है तो कुछ पश्चिम के वैचारिक प्रभावों का। पश्चिम का वैचारिक प्रभाव तो प्रगतिवाद पर भी था क्योंकि मार्क्सवाद पश्चिम से ही आया है, किंतु प्रगतिवाद के आगमन को तत्कालीन स्वाधीनता संग्राम की बहुत सी घटनाओं से सीधे तौर पर जोड़ना संभव था। प्रयोगवाद की

अध्याय
11

नई कविता

11.1 परिचय

(क) नयी कविता का आरंभ तथा अर्थ

नई कविता छठे दशक की कविता है। अज्ञेय ने 1951 में 'दूसरा सप्तक' प्रकाशित किया और यहीं से 'प्रयोगवाद' 'नई कविता' में रूपांतरित हो गया। कुछ इतिहासकारों की राय है कि 1954 ई. में जगदीश गुप्त की पत्रिका *'नयी कविता'* के प्रकाशन से नयी कविता आंदोलन का आरंभ हुआ।

यह विवाद का विषय है कि नयी कविता का अर्थ क्या है एवं नयी कविता वस्तुतः किस अर्थ में तथा कितनी नयी है? यूँ तो हर युग की कविता पिछले युग की तुलना में नयी ही होती है। किंतु, यहाँ नये का अर्थ अद्यतन से नहीं है। दरअसल, इस आंदोलन में जो कविता लिखी गई, वह अपनी अन्तर्वस्तु में पहले की परंपरा से काफी अलग है। इस नएपन की व्याख्या भिन्न-भिन्न प्रकार से की गई है।

नयी कविता के प्रमुख कवि हैं- अज्ञेय, भवानीप्रसाद मिश्र, रघुवीर सहाय, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, विजयदेव नारायण साही, धर्मवीर भारती, श्रीकान्त वर्मा, लक्ष्मीकांत वर्मा, मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, गिरिजाकुमार माथुर, अशोक वाजपेयी इत्यादि।

(ख) नयी कविता की काल सीमा

नयी कविता की काल सीमा को लेकर विवाद है। कुछ प्रमुख मत इस प्रकार हैं-

नन्ददुलारे वाजपेयी और **बालकृष्ण राव** का मानना है कि छायावाद के पतन के एकदम बाद 1937 ई. से ही नयी कविता का आरंभ हो गया। किन्तु, यह मत उचित नहीं है क्योंकि नयी कविता में जो आधुनिक भावबोध मिलता है, उसका विकास हम तब से नहीं मान सकते। नई कविता अपने सारतत्व में प्रगतिवाद व प्रयोगवाद का विकास होकर भी उनसे भिन्न आंदोलन है।

लक्ष्मीकान्त वर्मा ने इसका आरंभ 1951 ई. से माना है क्योंकि इसी वर्ष अज्ञेय द्वारा संपादित 'दूसरा सप्तक' प्रकाशित हुआ था। 1952 ई. में अज्ञेय ने अपनी कविताओं को नई कविताएँ कहा था। **शमशेर** ने भी इसी समय अपनी कविताओं को 'नई कविता' कहा।

शंभूनाथ सिंह कहते हैं कि नई कविता को प्रयोगवाद से अलग नहीं किया जा सकता। यह मत भी उचित नहीं माना जा सकता क्योंकि प्रयोगवाद में प्रयोगशीलता की केन्द्रीयता है जबकि नयी कविता में 'प्रयोग' केन्द्रीत प्रवृत्ति के रूप में नहीं दिखता।

गिरिजाकुमार माथुर एवं **रामस्वरूप चतुर्वेदी** का मानना है कि नई कविता प्रगतिवाद और प्रयोगवाद दोनों की विरासत से निर्मित संश्लेषण की कविता है। ''नई कविता'' पत्रिका के प्रकाशन के साथ ही इसका आरंभ माना जा सकता है।

इन सभी मतों के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रयोगवाद एवं नयी कविता में गहरा सम्बन्ध होने के कारण किसी एक वर्ष या घटना को नयी कविता के आरंभ के रूप में मानना कठिन है। किंतु, यदि कोई घटना सर्वप्रथम इस परिवर्तन को इंगित करती है तो वह 'दूसरे सप्तक' का प्रकाशन है। इसकी भूमिका में अज्ञेय ने प्रयोगवाद नाम का खंडन कर दिया था। काव्यानुभूति के जिस परिवर्तन की बात ये कवि कर रहे थे वह इसी समय से व्यक्त होने लगी थी। जहाँ तक 'नयी कविता' पत्रिका के प्रकाशन की घटना की बात है, वह नयी कविता के विकास को रेखांकित करती है, जन्म को नहीं।'

अध्याय
12

समकालीन कविता

12.1 परिचय

नई कविता के बाद साहित्यिक आंदोलन प्रायः कम दिखते हैं, किन्तु कई साहित्यिक प्रवृत्तियाँ समानांतर रूप में बनी हुई हैं। सामान्य तौर पर 1960 ई. के बाद की सम्पूर्ण कविता को समकालीन कविता कहा जाता है। इसके अंतर्गत कई प्रकार की प्रवृत्तियाँ विकसित हुईं जैसे- अकविता, जनवादी कविता, नवगीत आंदोलन इत्यादि। इनके अतिरिक्त कुछ गौण प्रवृत्तियाँ जैसे- विचार कविता, बीट कविता, न-कविता इत्यादि भी दिखती हैं।

12.2 अकविता या साठोत्तरी कविता

अकविता 1960 ई. के बाद विकसित हुआ आंदोलन है। इसे प्रतिष्ठित करने की पहली कोशिश 1963 ई. में जगदीश चतुर्वेदी के 'प्रारंभ' नामक काव्य संकलन में हुई। अकविता का सबसे प्रसिद्ध काव्य-ग्रंथ 'विजप' है, जिसमें तीन रचनाकारों– गंगा प्रसाद विमल (वि), जगदीश चतुर्वेदी (ज) तथा श्याम परमार (प) की रचनाएँ संकलित थीं। इस आंदोलन के अन्य प्रमुख कवि हैं– धूमिल, राजकमल चौधरी, मोना गुलाटी, सौमित्र मोहन, मुद्राराक्षस इत्यादि। इनके अतिरिक्त, कैलाश वाजपेयी, श्रीकांत वर्मा व सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कुछ कविताएँ भी इस आंदोलन में शामिल की जाती हैं।

अकविता को कहीं-कहीं साठोत्तरी कविता भी कहा जाता है। साठोत्तरी कविता के दो अर्थ हैं। सामान्य अर्थ में 1960 ई. के बाद की सारी कविता इसमें शामिल होती है। किन्तु, अब 'साठोत्तरी' को विशेषण नहीं बल्कि संज्ञा का अंश मान लिया गया है अर्थात् यह काल-सूचक नाम नहीं है। इस दृष्टि से 'साठोत्तरी कविता' नामकरण अकविता के लिए ही रूढ़ हो गया है।

अकविता आंदोलन भारतीय समाज की परिस्थितियों से स्वभावतः उपजा आंदोलन नहीं है। यह पश्चिम के बौद्धिक प्रभावों से निर्मित हुआ है। पश्चिम के 'एंटी पोएट्री' (Anti Poetry) आंदोलन का वैचारिक प्रभाव तो इस पर है ही, इसका नाम भी उसका अनुवाद है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पश्चिम में स्त्री-पुरुष अनुपात में बड़ा असंतुलन पैदा हुआ तथा युद्ध के कारण जीवन की क्षणभंगुरता का अहसास होने से सुखवादी मानसिकता पैदा हुई। इस मानसिकता का प्रतिनिधित्व यूरोप तथा अमेरिका में 'हंगरी जनरेशन' ने किया। इस भूखी पीढ़ी ने जिस प्रकार नैतिकता के सभी प्रतिमानों की धज्जियाँ उड़ायीं, उसी का प्रभाव साहित्य के क्षेत्र में अमेरिका की 'बीट जनरेशन', इंग्लैंड के 'टैडी बॉयज़' तथा जापान के 'सन ट्राइबर्स' पर पड़ा। इन्हीं सब आंदोलनों से बंगाल के कुछ कवि प्रभावित हुए जिन्हें 'विक्षुब्ध पीढ़ी' कहा गया। हिन्दी का अकविता आंदोलन 'हंगरी जनरेशन' तथा 'विक्षुब्ध पीढ़ी' के प्रभावों से निर्मित हुआ। हंगरी जनरेशन के प्रमुख कवि थे-एलेन जिन्सबर्ग, चार्ल्स मोल्सवर्थ, लैरी जॉन्स आदि। विक्षुब्ध पीढ़ी में चार कवि प्रसिद्ध थे- मलयनाथ चौधरी, देवीशंकर चट्टोपाध्याय, तपन दास तथा बिमल बसाक।

अकविता के नामकरण पर विवाद है। अकविता के विरोधियों की धारणा है कि 'अ' उपसर्ग का अर्थ 'निषेध' या 'विरोध' से है। इनके अनुसार, अकविता वस्तुतः 'कविता के विरुद्ध कविता' है। आज तक के सभी काव्य-आंदोलनों में कुछ मुद्दों पर मूल सहमति रही है किन्तु अकविता इस सहमति को तोड़ती है। यह कविता की कोई सामाजिक भूमिका नहीं मानती। इसके विपरीत, अकवियों की धारणा है कि 'अ' का अर्थ औपचारिकताओं से मुक्ति का प्रतीक है, निषेध या नकार का नहीं। यह कविता कविता के उन नियमों को खारिज करती है, जो उस पर थोपे गए हैं। कवि अपनी हर बात को बिना किसी औपचारिकता के कविता में कह सके-यही अकविता का प्रयास है।

अकविता की विशेषताएँ

- अकविता को प्रायः 'अवाँगार्द' (Avant-garde) लेखन कहा गया है। अवाँगार्द लेखन की धारणा पश्चिमी साहित्य की है। इसका शाब्दिक अर्थ है सेना की अगली टुकड़ी। जिस प्रकार सेना की अगली टुकड़ी सर्वाधिक आक्रामक तथा

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी तथा फ्लोचार्ट का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456